आधुनिक हिन्दी - उन्नीसवीं सदी

- साहित्यिक क्षेत्र में खड़ी बोली और ब्रज भाषा में बढ़ता विवाद ।
- आधुनिक काल का विकास ।
- मुंशी सदासुखराय जिन्हें खड़ी बोली को आगे बढ़ाने में प्रथम दर्जा दिया जाता है । 1852 में उनहोंने आग्रा से *बुद्धि-प्रकाश* नाम की पत्रिका छापना शुरु किया ।
- इंशा अल्लाह खान की लेख '*रानी केतकी की कहानी*' जो कि 1800 और 1808 के लगभग लिखी गयी थी, इसको खड़ी बोली के सदंर्भ में बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । सक्सेना (1989 : 23) का मानना है कि यह हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी है ।
- लल्लु लाल (1763-1825) की अनेक रचनाएं - *सिंहासन बत्तिसी* (1801) का मिर्ज़ा काज़िम अली के साथ, *बेताल पच्चिसी* (1801) का मज़हर अली खां के साथ, *राजनीती* (1812) का ब्रज भाषा में अनुवाद जो *हितोपदेश* पर आधारित था । *प्रेमसागर* का प्रकाशन 1810 में जो खड़ी बोली में अनुवाद है ब्रज भाषा से ।
- सदल मिश्र (1764-1849) की दो प्रमुख रचना - *चन्द्रावती* 1803 में और *रामचरित* 1806 में ।
- राजा लक्ष्मण सिहं (1826-1896) का भी हिन्दी साहित्य में योगदान रहा । 1861 में *प्रजाहित* नाम की पत्रिका निकाली । इसी सन् में *शकुतंला* का अनुवाद, फिर *रघुवशं* (1878) और *मेघदुत* (1883) का अनुवाद जो कालिदास के प्रसिद्ध ग्रथं थे ।
- भारतेदुं हरिशचद्रं (1850-1885) को आधुनिक हिन्दी का पिता कहा जाता है । *कवि वचन सुधा* नामक पत्रिका का प्रकाशन 1867 से, फिर *हरिशचद्रं मैगजीन* (1873) नामक पत्रिका जो बाद में *हरिशचद्रं चंद्रिका* के नाम से प्रकाशित हुई । भारतेदुं ने *बाला बोधिनि* नाम की पत्रिका भी छापनी शुरू की । मदन गोपाल (1971) के अनुसार 'महिलाओं के लिए एक मासिक पत्रिका, महिलाओं की शिक्षा और उनकी मुक्ति के लिए एक आंदोलन के प्रबल समर्थक थे'। बंगाली नाटक *विदया सुदंर* का अनुवाद । *रत्नावली* का अनुकूलन (प्रस्तावना: हिन्दी साहित्यिक भाषा में, व्याकरण पर कम परन्तु संचरण पर ध्यान) फिर *वेनिस के व्यापारी* का अनुकूलन *दुर्लभ बंधु* (1880) के नाम से । अन्य कार्यों में *सत्य हरिश्चंद्र*, *चंद्रावाली*, *मुद्रा राक्षस* (1875), *धनंजय विजया, कारपूर मंजरी* (1877) और *पाखण्द विदमबण* हैं । उनके मूल कृतियों में *वैदिक हिंसा हिंसा ना भवाति*, 1873 का नाटक, जो मांस भक्षण और शराब के पीने (शैव और वैष्णव के भक्तों की तरफ इशारा) के बारे में एक व्यंग्य प्रहसन है । बनारस की स्थिति और वेश्याओं की अवस्था पर आधारित *प्रेम जोगिनि* (1875) । भारत में बिगड़ती स्थिति से सम्बंधित *भारत दुदर्शन* और *अंधेर नगरी* जेसै नाटक अभी भी बहुत लोकप्रिय हैं। भारतेन्दु ने 3000 से अधिक भक्ति गीत लिखे हैं, और सभी में सबसे लोकप्रिय "*ओम जय जगदीश हरे*" है।